

बाबा मुक्तानन्द की महासमाधि के सम्मान में

सिद्धयोग शक्तिपात ध्यान-शिविर

अक्टूबर २०२६

६ सितम्बर, २०२६

आत्मीय पाठक,

सिद्धयोग पथ पर, अक्टूबर का माह बाबा मुक्तानन्द के माह के रूप में जाना जाता है। इसका कारण यह है कि २ अक्टूबर, सन् १९८२ की पूर्णिमा को बाबा जी ने महासमाधि ली। [जब एक सन्त या मुक्तात्मा अपनी देह का त्याग करते हैं तो संस्कृत में इसे 'महासमाधि' कहते हैं।]

अक्टूबर १९८२ से सिद्धयोगीजन प्रति वर्ष, सौरतिथि और चान्द्रतिथि, दोनों तिथियों के अनुसार बाबा जी की महासमाधि का सम्मान करते आ रहे हैं। सन् २०२६ में, चान्द्रतिथि के अनुसार बाबा जी की महासमाधि का दिवस २५ अक्टूबर को है। सौर एवं चान्द्र महासमाधि—दोनों को साथ में लेकर चलें तो ये दोनों ही अवसर एक ऐसे माह की रचना करते हैं जो पूर्ण रूप से बाबा जी को समर्पित है।

बाबा मुक्तानन्द ने ही समस्त विश्व को शक्तिपात से परिचित कराया। उन्होंने इस प्राचीन ज्ञान को हर उस व्यक्ति तक पहुँचाने में पहल की जो इसे प्राप्त करना चाहता था। इसके पूर्व, शक्तिपात एक रहस्यात्मक और गूढ़ घटना थी; यह ऐसे कुछ विद्वान ऋषि-मुनियों का अत्यन्त गोपनीय रहस्य था जिन्हें इसका ज्ञान हुआ था या जिन्हें इस ज्ञान की दीक्षा प्राप्त हुई थी।

बाबा मुक्तानन्द की अपार उदारता ने यह सब परिवर्तित कर दिया। अपनी ध्यान-क्रान्ति के एक भाग के रूप में, बाबा जी ने समस्त विश्व में मुमुक्षुओं को शक्तिपात दीक्षा प्रदान की। इतना ही नहीं, शक्तिपात प्रदान करने के लिए वाहनस्वरूप, बाबा जी ने सिद्धयोग शक्तिपात ध्यान-शिविर की रचना की। [अंग्रेज़ी में ध्यान-शिविर के लिए शब्द है, 'इन्टेन्सिव']। सच तो यह है कि बाबा जी ने इस कार्यक्रम की केवल रचना ही नहीं की, अपितु उन्होंने 'इन्टेन्सिव' शब्द का इस प्रकार प्रयोग

पहले-पहल किया जिसका संकेत ऐसे कार्यक्रम की ओर है जिसमें किसी विशेष सिखावनी, विषय या अनुभव में कई घण्टों या दिनों तक निमग्न हो जाना होता है।

बाबा जी ने सन् १९७४ में, पहला शक्तिपात ध्यान-शिविर दिया। इसकी रचना के परिणामस्वरूप, तबसे लेकर आज तक सिद्धयोगी एवं नए साधक बाबा जी की परिकल्पना, दूरदर्शिता और सदाशयता से लाभान्वित होते आ रहे हैं। एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन के तत्वाधान में, इसके बाद के वर्षों और दशकों में सैकड़ों शक्तिपात ध्यान-शिविर आयोजित किए गए हैं। और पिछले बाईस वर्षों से, सन् २००४ से, प्रति वर्ष बाबा मुक्तानन्द की महासमाधि के सम्मान में शक्तिपात ध्यान-शिविर आयोजित किया जाता रहा है।

मैं बड़ी कृतज्ञता के साथ आपसे यह साझा करना चाहती हूँ कि इस वर्ष, यानी सन् २०२६ में, यह एक दिवसीय कार्यक्रम २४ और २५ अक्टूबर के सप्ताहान्त पर आयोजित होगा। यह कार्यक्रम सिद्धयोग आश्रमों, ध्यान-केन्द्रों तथा भाग ले रहे नामसंकीर्तन एवं ध्यान-समूहों पर आयोजित होगा।

बाबा मुक्तानन्द की महासमाधि के सम्मान में, सन् २०२६ के सार्वभौमिक सिद्धयोग शक्तिपात ध्यान-शिविर का शीर्षक है :

चिति के प्रकाश को आँख भरकर निहारो

हर धर्म में, हर परम्परा में कोई एक ऐसा महोत्सव, कोई एक ऐसा तीर्थस्थल होता है जो उन लोगों के लिए स्थिरता प्रदान करने, उनके मन को एक स्थान या बिन्दु पर केन्द्रित करने का कार्य करता है जिन्हें किसी ऐसी चीज़ की तलाश है जो उनके दैनिक जीवन के अनुभव के परे हो। सिद्धयोगियों के लिए, शक्तिपात ध्यान-शिविर का वही स्थान है। यह पवित्र है, यह पूजनीय है, यह गूढ़ है, यह अत्यन्त गहन है। यह शक्ति का गर्भगृह है और उसका स्रोत है।

आप सबके साथ शक्तिपात ध्यान-शिविर में होने के लिए मैं बहुत उत्सुक हूँ, इसका एक प्रमुख कारण यह है कि मुझे इस ध्यान-शिविर में सेवा अर्पित करने का सौभाग्य मिल रहा है। ध्यान-शिविर में आप मुझे कई बार देखेंगे—आपको जिस समय जो जानना है और आपको जिस समय जो करना है, उसके बारे में आपको निर्देश देते हुए।

सन् २०२६ के शक्तिपात ध्यान-शिविर में भाग लेने हेतु पंजीकरण करने के लिए मैं आपको प्रोत्साहित करती हूँ। आपसे मेरा एक निवेदन भी है। कई ऐसे लोग हो सकते हैं जो एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन की ई-मेल सूची में न हों या जो नियमित रूप से सिद्धयोग पथ की वेबसाइट शायद न देखते हों। इसलिए, कृपया इस बात पर विशेष ध्यान दें कि आपके अनुसार जिन लोगों को शक्तिपात ध्यान-शिविर में भाग लेना चाहिए—या जो स्वयं भाग लेने में रुचि रखते हों—उन सबको इसके बारे में पता हो। शक्तिपात ध्यान-शिविर के बारे में अधिक जानकारी के लिए, जैसे आपके लिए निकटतम आयोजन-स्थल कहाँ है और इसकी तारीख़ कौन-सी है, आप सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर जाकर इस विषय से सम्बन्धित पृष्ठों को पढ़ सकते हैं।

आपको यह निमन्त्रण देते हुए मेरे चेहरे पर मुस्कान खिली हुई है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

रामी करी-सर्टोरी

सिद्धयोग ध्यान-शिक्षिका

